

ओवर द टॉप मीडिया सेवाएं - निरंकुश प्रसारण पर रोक की आवश्यकता

तनिषा आचार्य

पूर्वस्नातक, राजनीतिशास्त्र विभाग

डॉ. विश्वनाथ कराड एम.आई. टी. विश्वशांति विश्वविद्यालय

पुणे, महाराष्ट्र

प्रस्तावना

तकनीकी युग में आज जहाँ एक और मानव जीवन सरल और सुचारु हो गया है वहीं दूसरी ओर मनुष्य ने उस से अपना जीवन आरामतलब बनाने के लिए इस कदर अतिशय प्रयोग किया है की अब उसके घातक असर प्रकट होने लगे हैं। तकनीक की क्रान्ति शुरू हुए कई वर्ष हो चुके हैं और हम सब बड़ी आसानी से उसमें ढल चुके हैं, फिल्में और टेलीविज़न हमने बहुत पहले ही अपना लिया है। आज इस कटु सत्य को तो हम नकार नहीं सकते की हम न पूर्णतः स्वदेशी हो पाए हैं क्योंकि सदियों पूर्व हमारी आज़ादी के साथ अपनी विरासत भी खो दी थी और न हम पूर्णतः विदेशी हो पाए हैं। इस अधरझूल में फंसे हुए हम भारतीयों के लिए अपने सांस्कृतिक पतन पर विचार करना आवश्यक तो है ही पर उससे ज्यादा जरूरी है ओटीटी प्लेटफॉर्म के धड़ल्ले से चलते इस व्यापार को रोकने की।

युवा पीढ़ी ने ओटीटी पर परोसा हुआ कंटेंट इस प्रकार से अपनाया है मानो बुद्धिजीवी होने के लिए बस इसी साक्ष्य की आवश्यकता है की वे इन वेब सीरीज से पूर्णतः सहमत हैं। २१वीं सदी का युवा, इस कदर आलस्य और असामाजिकता से प्रेरित है की वह सामाजिक कार्यक्रमों, त्योहारों और उत्सवों से दूर भागता है। विडम्बना है की वही युवा अपने आप को भीड़ भरे क्लब या डिस्को में असहज नहीं पता है। नेटफ्लिक्स जैसी निर्माण कंपनियों ने इस प्रवृत्ति को हवा देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। उल्टा ये कहना गलत नहीं होगा की यह लक्षण “नेटफ्लिक्स और चिल” के नारे को वास्तविक जीवन में साबित करने को मजबूर किये गए युवा का परिणाम है। कुल मिलाकर एक ऐसा माहौल तैयार किया गया है जहाँ समाज में स्वीकृति पाने के लिए आपका इस नयी विकृत वोक संस्कृति से केवल सहमत होना ही जरूरी नहीं है बल्कि उस तरह से जीवन जीना भी जरूरी हो गया है।

ओटीटी पर दिखाए गए शो / फिल्मों में महिलाओं का चित्रण

फेमिनिज़्म अपने चरम शिखर पर है होना भी चाहिए, क्योंकि जिस हिसाब से एक पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की दुर्गति हुई है उस से उन्हें उबारने के लिए हरसंभव प्रयास प्रशंसनीय है। किन्तु आज का जो यह समाज है वो आदर्श भारतीय समाज नहीं है वैदिक समाज तो मातृसत्तात्मक था और इसके कई उदाहरण इतिहास में आज भी व्याप्त हैं। छद्म नारीवादी इस अनभिज्ञता का फायदा उठाकर भारतीय नारी को कभी अति स्वच्छंदता पाने के लिए उकसाते हैं या कभी मान मर्यादा भूलकर सड़कों पर चिल्लाने को उकसाते हैं। ओटीटी पर अपना राज जमा चुकी कंपनियों ने इन छद्म नारीवादियों की इच्छा को पूरा करने में पूरी भागीदारी निभाई है। इन प्लेटफॉर्म पर मिर्ज़ापुर की गोलू गुप्ता कभी ‘सेक्स’ जैसे शब्द खुले आम बोलकर अपने आप को निडर बताना चाहती है या फिर या फिर लस्ट

स्टोरीज की कालिंदी जो एक शिक्षिका है, अपने ही विद्यार्थियों को रिझाकर मानो चरम सुख पा लेती है। अब कई युवा बोलेंगे की यही तो है वीमेन एम्पावरमेंट ! तो उन्हें बता दूँ की समाज की बेड़ियाँ असल में जमीनी हकिकत पर बदलाव लाने से टूटति हैं, जिसके उदाहरण मैं जितने दूँ उतने काम हैं हिमा दास या किरण बेदी का तो नाम सुना ही होगा। अश्लीलता में मग्न होना, अपनी जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ लेना और मानवीयता त्याग कर हिंसा की हदें पार करना नारीवाद नहीं है। यह मत भूलिए की ओटीटी प्लेटफॉर्म पर ही बिग बॉस (वूट सलेक्ट) रोडीज़ (ऍम एक्स प्लेयर) और स्प्लिट्सविला (एम एक्स प्लेयर) जैसे कथित लाइव शो प्रसारित होते हैं जिसमें पुरुषों द्वारा महिलाओं को ज़लील करना आम बात है। और तो और विजेता बनने की होड़ में कई महिलाएं फूहड़ता से पेश आने को मजबूर की जाती हैं। राखी सावंत और रुबिका दिलैक जब स्क्रीन पर दहाड़े मार मार कर चिल्लाती हैं तब न जाने कैसे आज के छद्म नारीवादी उसके चटकारे लेते हैं। उनके प्रोपोगंडा की पोल वही खुल जाती है। ओटीटी प्लेटफॉर्म की प्रसिद्धि का एक कारण यह भी है की उस पर अब वो सेरिअल्स प्रसारित होते हैं जिन्हे दूरदर्शन पर भी खूब प्रसिद्धि मिली है। अंतर बस इतना है की टेलीविज़न पर वो सीमित समय के लिए प्रसारित होते थे और अपने मोबाइल फ़ोन पर अब उन्हें घंटों देखा जा सकता है। एकता कपूर बॉलीवुड के लगभग हर कलाकार द्वारा सराही गयी और "स्ट्रिंग वुमन" का ठप्पा प्राप्त कर चुकी है किन्तु फिल्म और वेब सीरीज निर्माता के तौर पर वो महिलाओं को किसी उपयोग में लेकर फ़ेंक दी जाने वाली वास्तु के रूप में दर्शकों को परोसती है और उस पीढ़ी पर लानत है जो उसे स्वीकारते हुए लज्जा से डूब नहीं जाती। इन सीरियल्स में सभी बुरी पात्र महिलाएं हैं। किसी परिवार में आपसी सामंजस्य नहीं है और सभी महिलाएं एक दूसरे के लिए षड़यंत्र रचती नजर आती हैं। जाहिर सी बात है की ऐसा देखकर बड़ी हुई कोई नवयुवती किसी प्रकार के रिश्ते में अपनत्व न तो महसूस कर पाएगी और न ही किसी प्रकार से परिवार की बुनियाद रख पाएगी। ओटीटी प्लेटफॉर्म पर दिखाए गए नारी के पात्रों में सबसे बड़ी समस्या यह है की नारीशक्ति को केवल उन गलत कार्यों को अंजाम देना मान लिया गया है जो आम तौर पर पुरुषों द्वारा किये गए हैं। उल्टा हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए की गलत को गलत कहकर नकारा जाए। सवाल ये उठता है की हम बराबरी का दर्जा देने के चक्कर में कहीं बर्बादी का प्रसार तो नहीं कर रहे ? उदाहरण के तौर पर फोर मोर शॉट्स नामक वेब सीरीज की महिलाएं दारु पीकर, विदेश यात्रा करके पैसा उड़ाने में सभी समस्याओं का हल पाती हैं। क्या किसी महिला की काबिलियत को इस प्रकार सीमित किया जाना ठीक बात है ?

धर्म और जाति पर आधारित समुदायों का चित्रण

जिस देश ने सदियों तलक अनेकता में एकता के नारे के साथ सभी धर्मों, जातियों, क्षेत्रों के लोगों को एकता के सूत्र में पिरोकर रखा है उस देश को खोखला करने के लिए ओटीटी प्लेटफॉर्म पर पूरा बंदोबस्त किया जा रहा है। सामाजिक समरसता को खत्म करने के लिए किरदारों को इस प्रकार से चित्रित किया जाता है ताकि एक धर्म, उसके प्रतीकों की छवि बर्बाद करके समाज को तोड़ा जा सके। इस सतत प्रक्रिया में पातळ लोक, असुर, आदि वेब सीरीज के बाद अब तांडव और पौरषपुर का नाम जुड़ गया है। सेक्रेड गेम्स द्वारा सनातन धर्म का मखौल उड़ाया गया और समाज में जहां हिन्दू मुसलमान शान्ति से रह रहे थे वहां भगवा आतंकवाद के मिथक से उस सौहार्दपूर्ण वातावरण को खत्म करना चाहा। जब उससे भी दंगे नहीं भड़के तो लीला और तांडव नामक वेब सीरीज द्वारा कथित "डर का माहौल" बेचने का निर्लज्ज प्रयास किया गया। अब घर बैठे मोबाइल पर वेब सीरीज देखने वाली नवयुवा पीढ़ी इस घृणास्पद कंटेंट को देखेगी तो राजनैतिक और सामाजिक रूप से इसी तरह से

अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करेगी। धर्म के नाम पर सदियों से वोट बैंक खोलकर बैठ राजनैतिक दलों को इस तरह के कंटेंट को और आग देना अच्छा लगता है। और यदि ऊँची जात - नीची जात के नाम से हिंसा उकसाई जा सके तो उसपर सिंकी राजनीतिक रोटियों का स्वाद दुगुना हो जाता है।

समाज में दुर्भावना फैलाने हेतु प्रायोजित निर्देशन, संवाद और सिनेमैटोग्राफी

ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अब स्टैंड अप कॉमेडियंस की भरमार भी है। उनकी स्क्रिप्ट पहले से ही तैयार होती है और वे जो भी बोलते हैं सभी कुछ पूर्ववत् तय होता है। वीर दास से लेकर केनी सेबेस्टियन तक सभी तथाकथित कॉमेडियंस ने जल्दी से शोहरत पाने का सूत्र वरुण ग्रोवर, कुणाल कामरा और मुनवर फ़ारुक्की जैसे अपने कट्टर वामपंथि आकाओं से सीखा है और ऑडियंस को हिन्दफोबिया से लदा हुआ कंटेंट पेश करना जारी रखा है। इसे जरूरत से ज्यादा सहनशीलता कह लीजिये या फिर किसी भी प्रकार के नियंत्रण की कमी, पर ओटीटी प्लेटफॉर्म पर हिन्दू धर्म के अनुयायियों की भावनाओं पर लगातार कुठाराघात हुआ है। जहां एक ओर बढ़ती असहिष्णुता को रोकने का प्रयास करना चाहिए वहीं युवा पीढ़ी को अधर्म की ओर ले जाने के लिए धर्म का मखौल उड़ा कर, खुद को नास्तिक कह देना कूल प्रतीत होता है पर शायद वे ये नहीं जानते की ना तो वे नास्तिक होने का अर्थ जानते हैं और न ही वे अपने धर्म और संस्कृति से जुड़े हुए हैं। ओटीटी पर प्रसारित कई वेब सीरीज और फिल्मों को असली जीवन पर आधारित कहा जाता है फिर उन्हीं में कहानियों को तोड़ मरोड़कर इस तरह दर्शाया जाता है मानो असलियत भी उतनी ही दुखद, दयनीय, या भयावह हो। कुछ निर्देशकों ने इस में देश के सशस्त्र बलों के गलत चित्रण को भी नहीं बक्शा है। सेना की यूनिफार्म को फाड़ते हुए दिखाने से लेकर वायु सेना के अफसर को गाली देते हुए दिखाना। हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। क्या हमारी संस्कृति की विरासत बस इस घटिया स्तर के मनोरंजन तक सिमट कर रह गयी है?

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

समाज में बढ़ती अराजकता और अपराध दर का सीधा कारण है ओटीटी प्लेटफॉर्म पर दिखाई कई अश्लीलता और अशिष्टता। हिंसा और क्रूरता का बेरोकटोक प्रसारण हो रहा है। अशिष्ट भाषा का प्रयोग इस कदर प्रचलित किया गया है की स्कूल जाते विद्यार्थी भी आज अपशब्द बोलकर स्वयं को बुद्धिमान समझते हैं। यदि निरंतर किसी एक प्रकार के दृश्य स्क्रीन पर दिखाए जाते हैं तो उसका असर मनुष्य के दिमाग पर कुछ इस तरह होता है की वह उस दिखाए गए चित्रण को ही असलियत मानने लगता है। मनोवैज्ञानिकों की मानें तो इस तरह का चित्रण निरंतर देखने से सहानुभूति और दया जैसे भाव ही खत्म हो जाते हैं और आम जीवन में हिंसा में लिप्त होने में कुछ गलत नहीं लगता। आज भारतीय युवाओं को एंग्जायटी और डिप्रेशन जैसी मानसिक समस्याओं से जूझना पद रहा है और उसका प्रमुख कारण है ओटीटी प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया पर २४ घंटे व्यर्थ करने की लत। विशेषज्ञों की मानें तो लगातार स्क्रीन देखने से सोचने की क्षमता का अंत हो जाता है और यदि चिंतन करने की ही क्षमता समाप्त हो जाए तो उसे पागलपन के समकक्ष समझा जाता है। क्या इतने विकासशील होते हुए भी विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में मीडिया के सही प्रयोग का तरीका सिखाने में हम असहाय हैं?

विनियमन की आवश्यकता

केंद्र सरकार ने हाल ही में ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए एक गाइड लाइन जारी की थी जिसके तहत एक तीन स्तरीय तंत्र होगा। अभिभावकों का अवलोकन की जो संभावना अब है वो बेहतरीन कदम है। एक शिकायत निवारण तंत्र होगा, जो कंटेंट दिखाया जाएगा उसे भी आयु वर्ग के अनुसार विभाजित किया

जाएगा। एक सेल्फ रेगुलेटरी बॉडी होगी जो तय करेगा की कंटेंट की रेटिंग क्या है; किस उम्र के लिए निर्धारित है। ये स्व नियामक तंत्र कितना सही तरीके से काम करपाएगा ये आने वाला समय हमें बताएगा। ये केवल एक गाइड लाइन है और इस के तहत कोई क़ानून नहीं बना है। दूसरी मुसीबत ये भी है की क्या इन गाइडलाइंस पे सभी ओटीटी प्लेटफॉर्म अमल करेंगे? तो आज की ज़रूरत है की एक कड़ा नियम लागू किया जाए क्योंकि जो असामाजिक तत्व हमारी संस्कृति का पतन चाहते हैं उन्हें किसी प्रकार का तो अंकुश होगा।

एक पीढ़ी के रूप में हमारा कर्तव्य

तीन प्रमुख बातें जो सुनने को मिलती है वो ये की पहला फ्रीडम ऑफ़ एक्सप्रेसन है, दूसरा की सिनेमा (और अब ओटीटी प्लेटफॉर्म) समाज का आईना हैं और तीसरा ये की नया सीखने को मिलता है।

1. ओटीटी प्लेटफॉर्म को संवैधानिक नियमों का पालन करते हुए ये सुनिश्चित करना होगा की वह सामग्री को स्ट्रीम नहीं करेंगे, जो देश की संप्रभुता और अखंडता के खिलाफ है, राज्य की सुरक्षा को खतरे में डालती है, जो भारत के विदेशी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों के लिए हानिकारक है।
2. दूसरा ये की जहां तक समाज का आईना होने की बात है तो हम ये दिखाना भूल रहे हैं की। जो गलत कार्य स्क्रीन पर आदर्श के रूप में दिखा रहे हैं उनके परिणामों को प्रदर्शित नहीं किया जा रहा है। और जितना हमारे समाज से ये ओटीटी प्लेटफार्म प्रभावित होते हैं उससे कहीं ज्यादा वे दर्शकों को चित्रित पात्रों की तरह पेश आने के लिए लालायित करती हैं। जिसे हीरो और हेरोइन बनाया जाए यदि वही गलत करते हुए नजर आएंगे तो उनका अनुकरण करना बाल मन को बहुत आकर्षित करता है
3. अब जो नया है वो क्या है? सही और गलत के बीच यदि हम कोई रेखा ही नहीं रखेंगे तो शायद हम बुनियादी स्तर पर ही मनुष्यता क्या होती है उसे भुला देंगे। आप एक जिम्मेदार माता या पिता बनेंगे तो अपनी १३ वर्षीया पुत्री को "बॉम्बे बेगम्स" नामक वेब सीरीज में चित्रित 'शाई' नामक किरदार की तरह ड्रग्स करते हुए नहीं देखना चाहेंगे। यहां गौर करने लायक ये है की आज की पीढ़ी के परक्षकों के पास अपने बच्चों के लिए समय नहीं है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा की अभिभावक के तौर पर जिम्मेदारी सही तरीके से निभाई जाए।

युवा तरुणाई की जो फसल भारत में तैयार है, वह विश्व में सबसे अधिक है। लोकतांत्रिक राष्ट्र में युवाओं का उपयोग राष्ट्र हित में होना चाहिए, जिसके लिए युवा पीढ़ी में नैतिक कार्यों की शिक्षा एवं कर्तव्यों की जागरूकता के साथ आत्मचिंतन होना अतिआवश्यक है।